# * पहचान निर्माण में मीडिया एवं प्रौद्योगिकी के प्रभाव :→

## मीडिया :→

संचार के माध्यमों का अर्थ है कि वे माध्यम जो सूचना तकनीकी की देन है तथा जिनका प्रभाव जन-जन तक एक ही समय में पड़ता है। इन माध्यमों में समाचार पत्र, विचारों, टीका-टिप्पणियों, चित्रों और ऐसी ही अन्य सूचनाओं को सम्प्रेषित करने के साधन के रूप में समाचार-पत्रों, रेडियो एवं टेलीविजन का महत्वपूर्ण योगदान है। इनकी पहुँच आम जनता तक होती है। संचार माध्यमों का औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा दोनों ही में इसका अत्यंत महत्व है। इन माध्यमों का औपचारिक शिक्षा का बहुत योगदान होता है।

शिक्षा द्वारा पहचान निर्माण में संचार माध्यमों का महत्व निम्नांकित है।

1. राष्ट्रीय एकीकरण के समझ का विकास करना।
2. अंतर्राष्ट्रीय समझ का विकास करना।
3. सामाजिक कार्यों में भाग लेने की प्रवृत्ति का विकास करना।
4. स्वच्छ वातावरण संबंधी रुचि उत्पन्न करना।
5. वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण की हानियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
6. स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान, कौशल तथा आदतों का विकास करना।

Scanned with CamScanner

7. सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
8. प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग की प्रवृत्ति का निर्माण करना।
9. दूरदर्शन पर विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं को दिखाकर निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
10. वैज्ञानिक रुचि तथा जिज्ञासा का विकास करना।
11. जीव - जन्तुओं तथा वन्य जीवन में रुचि उत्पन्न करना।
12. राष्ट्रीय विकास की योजनाओं और उपलब्धियों की जानकारी देना।
13. व्यवसाय संबंधी कौशलों के बारे में जानकारी देना।
14. सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने की प्रवृत्ति पैदा करना।
15 अनपढ़ समुदाय में दूरदर्शन को एक सशक्त साधन के रूप में उपयोग करना।
16. विश्लेषण एवं तर्क शक्ति का विकास।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी क्षमताओं का विकास करके अपनी पहचान निर्माण में संचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। समाचार - पत्रों में सरकार, राजनीति, खेल, विज्ञान, व्यवसाय और कला आदि विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित नवीनतम घटनाओं के लेख प्रकाशित होते हैं। इससे व्यक्ति के विकास में सहायता मिलती है।

Scanned with CamScanner

## तकनीकी (Technology) ↳

तकनीकी विज्ञान, अंग्रेजी के Techno logy शब्द का अर्थ है। इसका विशेष अर्थ है- दैनिक जीवन में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करने की विधियाँ। तकनीकी शब्द को अधिकतर मशीन या मशीन संबंधी प्रत्ययों से साधारणतः जोड़ा जोड़ते हैं लेकिन ऐसा होना आवश्यक नहीं है कि हमेशा ही मशीन का प्रयोग हो। इसका तात्पर्य प्रयोगात्मक कार्य से होता है, जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान या सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है यदि इसका प्रयोग शिक्षा में होता है तो यह शैक्षिक तकनीकी कहलाता है।

शैक्षिक तकनीकी विज्ञान पर आधारित एक ऐसा विषय है जिसका उद्देश्य शिक्षक, शिक्षण तथा छात्रों के कार्य को निरंतर सरल बनाना है। जिससे कि शिक्षा के ये तीनों अंग मिलकर भली-भांति समायोजित रहें और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में कम से कम उपागमों के माध्यम से सक्षम और समर्थ रहें। इस विषय के अंतर्गत शिक्षण प्रक्रिया के बेहतर विकास पर ध्यान दिया जा सके।

Scanned with CamScanner

## * तकनीकी की भूमिका को प्रभावित करने वाले कारक :→

तकनीकी का पहचान निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका है और इस तकनीकी को प्रभावित करने वाले कारक निम्नांकित हैं।

### 1. राजनैतिक कारक (Political factors) :→

राजनीतिक कारक वे कारक हैं जो राष्ट्र की राजनीतिक परिस्थितियों, राजनीतिक नीतियों तथा वैज्ञानिक अन्वेषणों एवं राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति से संबंधित होते हैं। तकनीकी का प्रचार-प्रसार सरकार पर निर्भर है। टेलीविजन तथा दूरसंचार के क्षेत्र में नये अविष्कारों का प्रयोग में तथा उनके प्रचार-प्रसार में राजनीतिक कारकों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

### 2. शैक्षिक कारक (Educational factors) :→

इसमें शिक्षकों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण मुख्य कारक है। यदि शिक्षकों को तकनीकी के क्षेत्र में उचित स्तर पर सुनियोजित प्रशिक्षण प्रदान किया जाय तो ये शिक्षक तकनीकी के विकास में मील का पत्थर सिद्ध हो सकते हैं। ये नवीन प्रयोग तथा अन्वेषण का कार्य प्रभावशाली ढंग से करके नवीन खोजों एवं नवीन आयामों को प्रभावशाली नेतृत्व एवं स्वस्थ दिशा देने में समर्थ हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner

3. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)

मनोवैज्ञानिक कारकों के अंतर्गत शिक्षकों, छात्रों तथा शिक्षालयों की रुचि स्तर, प्रवृत्तियों आदि का समावेश होता है। शिक्षकों एवं छात्रों की तकनीकी में व्यक्तिगत रुचि, अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं प्रयासों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। विद्यालयों का सही परिवेश तकनीकी शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. आर्थिक कारक (Economic factors) :-

किसी भी प्रयोग, अन्वेषण तथा खोज की रीढ़ 'धन' होता है। धन के बिना तकनीकी विकास, प्रसार तथा प्रशिक्षण संभव नहीं है। धन के बिना तकनीकी विकास के लिए आवश्यक उपकरण नहीं खरीदे जा सकते हैं और न ही प्रयोग किये जा सकते हैं।

5. सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारक
(Social and cultural factors) :-

शिक्षा का दर्पण समाज तथा संस्कृति है। जिस तरह का समाज होगा, जैसी संस्कृ होगी वैसी ही वहां की शिक्षा होगी। जिस समाज में तकनीकी के प्रति जागरूकता है तो वहाँ तकनीकी का प्रभाव दिखता है और तब शैक्षिक तकनीकी का

Scanned with CamScanner

भविष्य भी उज्ज्वल होता है। जहाँ समाज और संस्कृति में वैज्ञानिक अवधारणा होती है तो शैक्षिक संस्थानों में छात्र, शिक्षक, अभिभावक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में सफलता अवश्य प्राप्त करेंगे।

6- तकनीकी कारक (Techonology Factors) →

तकनीकी के क्षेत्र में जितनी अधिक प्रगति होती है उतना ही शैक्षिक तकनीकी का उन्नत और समर्थ होता है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के लिए तकनीकी क्षेत्र के प्रयोग उत्सुकता एवं जिज्ञासा के साधन बनते जा रहे हैं। इन प्रयोगों एवं परीक्षणों का मूल्यांकन कर उनमें वांछित परिवर्तन संशोधन तथा परिमार्जन धन के बिना आवश्यक उपकरण नहीं खरीदे जा सकते हैं और नहीं प्रयोग किये जा सकते हैं।